गायत्री ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गायत्री

श्री गुरु परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्य मात्रेण चिदानन्दाय ते तनुः ॥

व्यास पूजा

श्रीगुरु पूजोत्सव

आषाढ़ पूर्णिमा

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा, रेवाड़ी

संग्रहकर्ता:— हरिराम शर्मा

साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२ उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३. साधु सज्जन का सत्संग करे।

४. एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

५. विषयों के अधीन न हो।

६ शत्रुओं को मित्र बनावे।

७ अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८ निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९. भूत मात्र पर दया रखे।

१०. अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उनपर दृढ़ आस्था रखे।

आश्रम के उद्देश्य

१- श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२- गोरक्षा और उनके लिए गोचरभूमि छुड़वाना।

३- जंगलों में वृक्ष लगवाना और उनके बीच में जलाशय बनवाना

४- शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्यमात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर से प्रचलित करना।

५- बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६- आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७- सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव उत्पन्न करना।

८- राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

❀ गुरु पूजा ❀

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओं ।

❀ आरती ❀

जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के सङ्कट क्षण में दूर करे ।।टेक।।
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसै मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।१।।
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किस की ।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ।।२।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ।।३।।
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय तुम से मैं कुमति ।।४।।
दीनबन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ।।५।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ।।६।।

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनु ।।१।।
मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ।।२।।

श्रीमत्पर ब्रह्म गुरुं भजामि – श्रीमत्पर ब्रह्म गुरुं वदामि ।
श्रीमत्पर ब्रह्म गुरुं स्मरामि – श्रीमत्पर ब्रह्म गुरुं नमामि ॥३॥
हंसो गणेशो विधिरेव हंसो – हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः ।
हंसोह् जीवः परमात्महंसो – हंसोऽय मात्मा गुरुदेव हंसः ॥४॥
नारायणं पद्म भवं वशिष्ठं – शक्ति च तत्पुत्र पराशरं च ।
व्यासं शुकं गौड पदं महान्तं–गोविन्द योगेन्द्र मथास्यशिष्यम् ॥५
श्री शंकराचार्य मथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तन्तोटकं वार्तिक कारमन्यत्–अस्मद् गुरुं सन्तत मानतोस्मि ॥६
हृदंबुजे कर्णिक मध्यसंस्थं–सिंहासने संस्थित दिव्य मूर्तिम् ।
ध्यायेत्गुरुं चन्द्रशिला प्रकाशं–सच्चित्सुखा भीष्टवरं दधानम् । ७
वन्दे गुरुणां चरणारविन्दे सन्दर्शित स्वात्म सुखाव बोधे ।
निःश्रेयसे जांगलि कायमाने–संसार हालाहल मोह शान्तये ।८
नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ।
नित्य बोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमामि तम् । ९॥
सर्व वेदान्त सिद्धान्तं गोचरं तमगोचरम् ।
गोविन्दं परमानन्दं गुरुं ब्रह्म नमामितम् ॥१०॥
स्थावरं जंगमं व्याप्तं तत्किंचित् सचराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥११॥
ज्ञान शक्ति समारूढस्तत्व ज्ञान विभूषितम् ।
भक्ति मुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१२॥
न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्व ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१३॥
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरो पदम् ।
मंत्र मूलं गुरो र्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥१४॥

मन्नाथः श्री जगन्नाथो मद् गुरुः श्री जगद्गुरुः ।
मदात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१५॥
अचिन्त्याव्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त जगदाधार मूर्तये गुरवे नमः ॥१७॥
ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्ति भेद विभागिने ।
व्योमवद् व्याप्त देहाय दक्षिणा मूर्तये नमः ॥१८॥
निधये सर्व विद्यानां, भिषजे भव रोगिणाम् ।
गुरवे सर्वलोकानां, दक्षिणा मूर्तये नमः ॥१९॥
न गुरोरधिकः न गुरोरधिकः न गुरोरधिकः परमानन्दः ।
शिव शासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः परमानन्दः ॥२०॥
मम शासनतो ममशासनतो ममशासनतो परमानन्दः ।
अयमेवशिव अयमेवशिवः अयमेवशिवः परमानन्दः ॥२१॥

दोहाः– ओ३म् निरंजनं दुःखभंजनं ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम करतार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार ॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार तुमरी ज्योतिका उजियार ।
मैं, मैं, मैं पन सर्वाधार नेति नेति कर वेद उचार ॥
एक आत्मा अपरम्पार शंकर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार जीवन प्राण आप ओंकार ॥
हरि नारायण अग्नि तार देव देव मैं करहुं पुकार ।
कृष्णानन्ताऽचलहं गौड हुँ फट् अल्ला सर्व पसार ॥
विनवौं तुमको बारम्बार प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तद्गन गणपति नैनमझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं,
ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपं ।
योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं,
श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥
परं पराणां परमं पवित्रं,
परेशमीशं सुरलोकनाथम् ।
सुरासुरैरर्चितपादपद्मं,
सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा,
भवत्कृपा श्रीमहिम प्रसादात् ।
प्राप्तो मया श्रीगुरवे महात्मने,
नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोस्तु ॥
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीः साक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप ।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्य्यात्मा ज्योतिः स्वरूप ॥
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप ।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ॥
भावात्मा भवात्मा शून्यामा शून्यस्वरूप ।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यान स्वरूप ॥

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत् ।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

दोहा

बन्दौ गुरुपदकंज कृपासिंधु नररूप हरि ।
महामोह तमपुञ्ज जासु वचनरविकरनिकर ।
भाव पात्र में अर्पकर सुन्दर जीवन फूल ।
सत्गुरु के अर्पण करो यही ज्ञान का मूल ॥

चौ०-वन्दौ गुरुपद पद्म परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
जननी जनकगुरु बन्धु हमारे । कृपानिधान प्राण ते प्यारे ॥
गुरु के वचनप्रतीति न जेही । स्वप्नेहु सुलभ न सुख सिधि तेही ॥
गुरुबिन भवनिधि तरे न कोई । जो विरंचि शंकर सम होई ॥

गुरु अष्टक

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं । यशश्चारु चित्रं धनं मेरु तुल्यम् ॥१
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं । ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२
कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादि सर्वं । गृहं बांधवा सर्वमेतद्धि जातम् ॥३

षडंगादि वेदो मुखे शास्त्र विद्या । कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ॥४
विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः । सदाचार वृत्तेषुमत्तो न चान्य ॥५
यशोमेगतं दिक्षु दान प्रतापात् । जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ॥६
न भोगे नयोगे नवा वाजिराजौ । नकांता सुखे नैव वित्तेषु चित्तं॥७
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये । न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये॥८
अनर्घ्याणि रत्नानि भुक्तानिसम्यक् । समालिंगिता कामिनी यामिनीषु
गुरोरष्टकं यः पठेत् पुण्य देही । यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ॥१०
लभेद् वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्म संज्ञं । गुरोरुक्तवाक्ये मनोयस्य लग्नम्॥११

दत्तात्रय स्तोत्र

प्रातः शिरसि शुक्लाब्जद्विनेत्रं द्विभुजम् गुरुम् ॥
वराभयकरं शान्तं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥

ॐ मूलाधारे वारिज पत्रे चतुरस्त्रम् ।
बंशं षंसं वर्णं विशालैः सुविशालम् ॥
रक्तं वर्णं श्री गणनाथं भगवन्तम् ।
दत्तात्रेयं श्री गुरु मूर्तिम् प्रणतोऽस्मि ॥१॥

स्वाधिष्ठाने षड्दल पत्रे तनुलिंगम् । बालं बोजं वर्णं विशालैः सुविशालम् ॥ पीतं वर्णं वाक्पति रमणं द्रुहिणम तम् ॥दत्तात्रेयं॥२
नाभौ पद्मं पत्र दशार्हम् डफ वर्णम् लक्ष्मी कान्तं गरुडारूढं नरवीरम ॥ नीलं वर्णं निर्गुणरूपं निगमान्तम ॥ दत्तात्रेयं ॥३॥
हृत्पद्मांके द्वादश पत्रे कठ वर्णम् । शांबं शैवं पूर्णमयन्तं शशिवर्णम् ॥ सुरगः स्थित्वा कुंकुम वर्णं शिव शक्तिम् ॥दत्तात्रेयं०॥४
कंठ स्थाने चक्र विशुद्धे कमलान्ते । चन्द्राकारे षोडश पत्रे सुर वर्णम् ॥ मायाधीशं जीव समेतं निज रूपम् ॥ दत्तात्रेयं० ॥५॥

आज्ञाचक्रे भृकुटि स्थाने द्विदलान्तम् । हंक्षं बीजं ज्ञान निधा॰ गुरु मूर्तिम् ॥ विद्युद्वर्णं ज्ञानमयन्तम् नटक्षाक्षं ॥ दत्तात्रेयं॰ ॥६॥ मूर्ध्नि स्थाने वारिज पत्रे शशि वर्णम् । शुभ्रं वर्णं पत्रसहस्र सुविशालम ॥ ह्रीं बीज क्षं वर्ण सहस्रं तुर्यान्तं ॥ दत्तात्रेयं॰ ॥७॥ शान्ताकारं शेषशयानं सुरवन्द्यम् । कन्तानाथं कोमलगात्रं कमलाक्षम ॥ चिन्तारत्नं चिद् घन पूर्णं द्विजराजम् ॥दत्तात्रेयं॰॥८ ब्रह्मानन्दं ब्रह्ममुकुन्दं भगवन्तम् । ब्रह्मज्ञानं सत्यमनन्तं भवरूपम् ॥ पूर्णं ब्रह्मानन्दमयन्तं तुर्यान्तम् ॥ दत्तात्रेयं ॥९॥

कीर्तन

सब प्रेम से मिल कर जय बोलो, श्री परमानन्द परम गुरु की ॥

भजन

मस्तक लाग रही म्हारे गुरु चरणन की धूल ॥टेक॥
जब यह धूल चढी मस्तक पर दुविधा हो गई दूर ॥१॥
इडा पिंगला ध्यान धरत हैं सुरति पहुंची दूर ॥२॥
यह संसार विघन की घाटी पहुँचे विरला शूर ॥३॥
प्रेम घटा म्हारे सद्गुरु लाये करी कबीर भरपूर ॥४॥

ब्रह्म का है आनन्द स्वरूप । टेक ॥
निराकार निर्विकार निरञ्जन, ज्योति स्वरूप अनूप ॥ १ ॥
अध ऊरध दायें अरु बायें, एक अखण्ड अनूप ॥ २ ॥
आनन्द को सब चाहें प्राणी, कहा रंक कहा भूप ॥ ३ ॥
एक ही परमानन्द विराजे, नहिं छाया नहिं धूप ॥ ४ ॥

म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरिजन के ॥ टेक ॥
माया बस हो रहा अज्ञानी जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानी ।
चुबक चुबक रह जाय हथोड़ी जैसे घन के ॥१॥
धन सम्पत्ति में फिरत भुलाया गुरु का शब्द नहीं चितलाया ।
अन्त समय पछताय नरक में जब लटके ॥ २ ॥
बिरही की तो बिरही जाने बेदरदी नहीं पीड़ पिछाने ।
फटा कलेजा जाय बीच गया सब तन के ॥ ३ ॥
जो दीखे सो रूप हमारा अलख लखे सोई लखने हारा ।
रोम रोम के बीच एक हुआ हरि चमके ॥ ४ ॥
शुद्ध सच्चिदानन्द अमाया ओंकार अज ध्यान लगाया ।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम नसके ॥ ५ ॥

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूँ तित तू ही तू है ॥ टेक ॥
तूही बन में, तूही घर मन्दिर में, कूप बावड़ी तूही सरवर में ।
तू ही सब का करतार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है, शुद्ध करन में तू ही पवन है ।
वरुणों में तू ही वरुण, जलों में गंगाधारा है ॥ २ ॥
ज्ञानी में ब्रह्मज्ञान तू ही है, योगी का मुख्य ध्यान तू ही है ।
सब का जीवन प्राण तू ही आधारा है ॥ ३ ॥
फूल पात फल डार तू ही है, कालों का महाकाल तू ही है ।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

सत्गुरु मिले म्हारे सारे दुख बिसरे अन्तर के पट खुल गये री ॥
ज्ञान की आग जली घट भीतर, कोटि करम सब जल गये री ।
पांच चोर लूटें थे रात दिन, आपते आप ही टल गये री ॥ १ ॥
बिन दीपक म्हारे हुआ उजाला, तिमिर कहां जाने नसगये री ।
तिरबेणी सी म्हारे धार बहत है अष्ट कमल दल खिलगये री ॥२
कोटि भानु म्हारे हुआ प्रकाशा, और ही रंग बदल गये री ।
अठसठ तीरथ हैं घट भीतर, आपस में रल मिल गये री ॥३
शून्य मण्डल में वर्षा होवे, अमी के कुण्ड उभल गये री ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नूर में नूर जो मिल गये री । ४

आरती

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की ॥
सब ब्रह्मण्डों के पृष्ठ भाग पर,
सत्तास्फूर्ति सबको दे रही है निजानन्द की ॥१॥
सारे विश्व के बाहर भीतर, हृदय-कमल में सूर्य मण्डल में,
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ॥२॥
यह संसार असार है अन्तिम, एक ज्योति है अखण्डानन्द की ॥३
सूर्य-चन्द्र विद्युत और तारे, अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४
ज्योति बिना कछु और नहीं है, अहं ज्योति है ज्ञान यही है ।
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति, जगरही है घट २ परमानन्द की॥५

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

ॐ द्यौ शान्ति रन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः बनस्पतय शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिः ब्रह्म शान्ति सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

--

रात्रि सत्संग

गुरु सम्बन्धी भजन

श्री परमानन्दाष्टक श्री गोविन्दाष्टक

व क्त व्य

आरती

--

मुद्रक व प्रकाशकः– भूमानन्द ब्रह्मचारी, भक्ति प्रेस, रेवाड़ी ।